अध्याय तृतीय

शोध की प्रविधि

अध्याय तृतीय

शोध प्रविधि

3.1 प्रस्तावना

अनुसंधान के लिए एक आदर्श रूपरेखा (प्रारूप) होना चाहिए। क्योंकि रूपरेखा के द्वारा अनुसंधान को अच्छी तरह से चरमसीमा तक पहुंचाया जा सकता है। शोध प्रविधि के अंतर्गत कैसे न्यायदर्श का चयन करना, उपकरणों का उपयोग, प्रदत्तो के संकलन में उपयोगी विधि, उपकरणों का प्रशासन, आदि यह मुख्य मुद्दे पर प्रकाश डालना जरूरी है। इसीलिए शोध प्रविधि अध्याय को कार्य अनुसन्धान के अंतर्गत महत्वपूर्ण है।

D – 331

''अनुसंधान एक ऐसी व्यवस्थित प्रक्रिया है। जिसके द्वारा नवीन तथ्यों की खोज तथा प्राचीन तथ्यों की पुष्टि की जाती है।''

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

3.2 न्यादर्श चयन

हमारा अधिकांश ज्ञान प्रतिचयन पर आधारित होता है। दैनिक जीवन में हम इसका प्रयोग करते है। जैसे किसी गृहिणी को यह मालूम करना होता है कि चूल्हे पर रखी उसकी पतीली में चावल पके अथवा नहीं, तब वह उसमें से कुछ दाने निकालकर देख लेती है और संपूर्ण चावलों के पकने का पता लगा लेती है।

ठीक इसी प्रकार शोध में शोधक संपूर्ण जनसंख्या अथवा समष्टि में से कुछ इकाईयों को चयन कर उन्हीं चयनित इकाइयों का अध्ययन अथवा परीक्षण कर संपूर्ण जनसंख्या के बारे में निष्कर्ष निकालता है। इसी प्रक्रिया को न्यादर्श चयन या सेम्पलिंग (Sampling) कहते है।

प्रतिचयन से मुख्य लाभ यह होता है कि पैसे एवं समय की बचत होती है तथा शोध परिणामों की शुद्धता भी बढ़ जाती है। यह तभी संभव है

जबकि 1. प्रतिदर्श समष्टि का प्रतिनिधित्व करें, 2. इसका आकार उचित होना चाहिए, जिससे कि विश्वसनीय परिणाम प्राप्त हो सके।

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श चयन हेतु गुजरात राज्य के दाहोद जिले में स्थित 240 माध्यमिक शालाओं में से 10 शालाओं का यादृच्छिक चयन विधि द्वारा चयन किया गया। चयनित शालाओं में 4 शहरी शालाऐं एवं 6 ग्राम्य शालाओं का समावेश किया गया। चयनित 10 शालाओं में 80 पुरूष 66 महिला ऐसे कुल मिलकार 146 शिक्षक थे।

146 शिक्षक एवं शिक्षिकाओं में से उनकी सहमति से 100 शिक्षकों का अध्ययन हेतु चयन किया गया। इसी प्रकार 60 शिक्षक एवं 40 शिक्षिकाओं के माध्यम से उनकी शैक्षिक परिपक्वता एवं व्यवसायिक संतुष्टि संबंधी आंकडे एकत्रित किये गये।

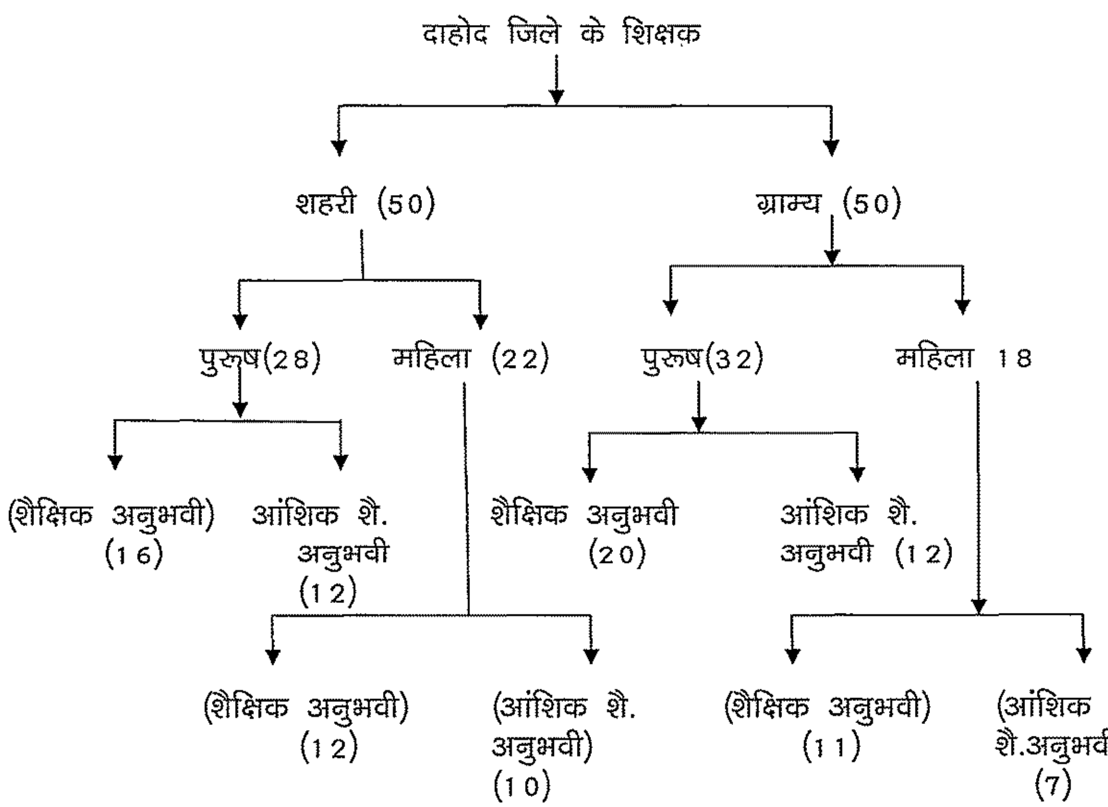

3.3 शोध में प्रयुक्त चर

स्वतंत्र चर

लिंग– पुरूष

स्त्री

स्थान– शहरी

ग्रामीण

शैक्षिक अनुभव– शैक्षिक अनुभवी

आंशिक शैक्षिक अनुभवी

परतंत्र चर

1. शैक्षिक परिपक्वता
2. व्यावसायिक संतुष्टि

3.4 प्रदत्तों के संकलन के लिए प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध में प्रदत्तों के संकलन हेतु दो उपकरणों का प्रयोग किया गया।

1. शैक्षिक परिपक्वता संबंधी प्रश्नावली
2. व्यवसायिक संतुष्टि संबंधी प्रश्नावली

1. शैक्षिक परिपक्वता संबंधी प्रश्नावली

अध्ययन हेतु चयनित न्यादर्श को परिपक्वता जानने हेतु उपयोग की गई प्रश्नावली को पांच घटकों में विभाजित किया गया यह घटक निम्नलिखित है।

1. शिक्षक द्वारा किये गये सेमिनार/तालीम कार्यक्रम

2. अध्यापन के क्षेत्र में अनुभव

3. कौशल्यों में कुशलता

4. शिक्षकों के पूर्व विद्यार्थियों की सफलता प्राप्ति

5. शालागत कार्यों में भाग/विविधि

इन घटकों को ध्यान में रखकर शैक्षिक परिपक्वता ज्ञात करने के लिए प्रश्नावली को निर्माण किया गया और इसके अंतर्गत कुल 14 प्रश्नों की प्रश्नावली रखी गई।

व्यावसायिक संतुष्टि संबंधी प्रश्नावली

माध्यमिक शिक्षकों की व्यवसायिक संतुष्टि के प्रदत्तों के संकलन के लिए डॉ. एस.के. सक्सेना द्वारा निर्मित अध्यापक कृत्य के बारे में 29 (उन्नतीस) प्रश्न दिये गये। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 'हाँ' या 'ना' में देना था। इस मापनी के अंतर्गत 4(चार) क्षेत्र को ध्यान में रखा गया था। जैसेः–

1. कार्य के साथ संतोष

2. वेतन (भुगतान) सुरक्षा और पदोन्नति के साथ संतोष

3. संस्थान की कार्य–प्रणाली के साथ संतोष

4. प्रधानाध्यापक, कार्यकर्ता आदि से संतुष्टि

और इस प्रश्नावली में कुल अंक 29 थे।

3.5 शोध में प्रयुक्त उपकरणों का प्रशासन

समग्र दाहोद जिले की 240 शालाओं में से यादृच्छित चयन विधि द्वारा 10 माध्यमिक शालाओं का चयन किया गया। प्रदत्त संकलन के लिए 31 जनवरी से 12 फरवरी तक का समय निर्धारित किया गया। शोधकर्ता ने निर्धारित समय के दौरान चयनित माध्यमिक शालाओं में मुलाकात करके प्रिन्सीपाल से मिले। प्राचार्य को (आई.आई.ई.) कालेज का प्रमाण पत्र दिखाया और अनुमति प्राप्त कर ली। फिर निश्चित किये गये दिन पर शाला में गये। अध्ययनकर्ता ने शुरू के तीन दिन में 2-2 शालाओं से प्रदत्तों का संकलन किया। 4 शालाओं के शिक्षकों के प्रदत्तों के संकलन में 1-1 दिन लगा। उचित समय पर शिक्षकों को प्रश्नावली दी गई उन्हें औपचारिक जानकारी दी गई और प्रश्नावली भरने के लिए 15-15 मिनिट कुल मिलाकर 30 मिनिट का समय दिया गया।

3.6 प्रदत्त संकलन के लिए प्रयुक्त उपकरण के अंकन की विधि

➢ **शैक्षिक परिपक्वता**

शैक्षिक परिपक्वता की जाँच के लिए प्रयुक्त उपकरण के अंकन में

(1) सकारात्मक उत्तर के लिए 1(एक) नम्बर और नकारात्मक उत्तर के लिए 0(शून्य) नम्बर निर्धारित किये गये।

(2) सकारात्मक में एक से ज्यादा उपलब्धि है जैसे शाला के अन्दर अन्य कार्य जैसे समय पत्रक बनाना, अनुशासन देखना। ऐसे हर कार्य के लिए एक अतिरिक्त नम्बर दिया गया।

➢ **व्यावसायिक संतुष्टि**

डॉ. एस.के. सक्सेना निर्मित उपकरण का अंकन मेन्युअल (Manual) के आधार पर किया गया।

1) 'हाँ' (सकारात्मक) के लिए 1(एक) नम्बर दिया गया।

2) नहीं (नकारात्मक) के लिए 0 (शून्य) नम्बर दिया गया।

जबकि 4 नम्बर और 29 नम्बर के प्रश्न को उलटा नम्बर दिया गया। उनमें 'हाँ' (सकारात्मक) के लिए 0(शून्य) और 'ना' (नकारात्मक) के लिए 1 (एक) नम्बर दिया गया।

3.7 प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने शैक्षिक परिपक्वता संबंधी प्रश्नावली एवं व्यवसायिक संतुष्टि की मापनी का परिकल्पना के अनुसार सांख्यिकीय विश्लेषण करने के लिए 'टी' परीक्षण, सह–संबंध (काल–पिर्यसन), मध्यमान, प्रमाण विचलन का उपयोग किया है।